मैं एक मोबाइल फ़ोन हूँ

मैं एक मोबाइल फ़ोन हूँ। मैं आज के समय की सबसे बड़ी ज़रूरत हूँ।

लोग मेरी मदद से बातचीत कर सकते हैं,

फोटो खींच सकते हैं और इंटरनेट से संपर्क भी कर सकते हैं।

मैं एक उपयोगी वस्तु हूँ, लेकिन कुछ लोग मेरा दुरूपयोग भी करते हैं।

सुहानी रथी पी-3 बी

माँ

चोट लगती तो तुम याद आती

दर्द होता तो तुम सहलाती।

रोज़ जब घर वापस आता हूँ

तो पीछे से आवाज़ आती है, "जूते बाहर रख ले"

पीछे देखूं तो कोई नहीं दिखता है

रात को तुम्हारा ही सपना दिखता है।

चाहे मैं मर जाऊँ तो तुम्हारी शक्ल सामने आएगी

हर रोज़ मुझे तुम्हारी याद सताएगी।

पार्थ फोगाट पी-5 बी

मैं एक मोबाइल फ़ोन हूँ

जी हाँ, मैं एक मोबाइल फ़ोन हूँ,

मैं आपको किसी भी विषय की स्पष्ट जानकारी देता हूँ।

मेरे अंदर फ़ोटो खींचने, किसी और से मेरे द्वारा बातचीत करने की खासियत है।

मैं बहुत मददगार व उपयोगी हूँ।

मुझसे लोग बहुत सारे काम कर सकते हैं।

मेरे अंदर बहुत सारे एप्स होते हैं।

मैं आपको इंटरनेट द्वारा किसी भी प्रकार की जानकारी देता हूँ।

पर मुझे ज़्यादा देखना बुरी बात है क्योंकि मैं आपकी आँखों को कमज़ोर कर देता हूँ।

कुछ लोग मेरा दुरूपयोग भी करते हैं जिसकी वजह से मैं कई गंभीर बीमारियों का कारण बन सकता हूँ।

जैसे हाथ के जोड़ों का दर्द, सिरदर्द, जी-मिचलाना, नींद नहीं आना आदि-आदि।

अत: मैं स्वयं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मेरा प्रयोग बहुत सोच-समझकर करें।

मेरा प्रयोग आवश्यकता पड़ने पर ही करें।

छोटे बच्चों को तो मुझसे दूर ही रखें।

आराध्य शर्मा पी-3-ए

खिड़की के बाहर

खिड़की के बाहर भी,

कोई होती होगी दुनियाँ।

इन हथकड़ियों के अलावा,

होती होगी चूड़ियाँ।

बोझ-सा बन जाता है अब तो,

इन चार दीवारों का साया।

खिसकता है चाँद जैसे ही,

बदलती है इनकी भी माया।

डर लगता है कि अब,

फिसल के न मैं गिर जाऊँ।

ज़जीरों को जकड़े-जकड़े,

यो ही न मैं मर जाऊँ।

चिट्ठी आने का मुझे इंतज़ार अब तो रहता है,

"कब होगा नया सवेरा ?

यह सवाल मुझे अब घेरता है।"

यादों का समंदर

बहुत दिन हुए हैं आज,

कलम को दवात में डुबाए हुए।

बहुत दिन हुए हैं, आज,

दिल की बात पन्नों पर लाए हुए।

यह पिल-पिलाते पन्ने,

आज कर्कश हो चले हैं।

कभी मेरी याद में डूबे हुए,

आज मुझे ही भूल चुके हैं।

लाल, पीले, हरे;

हर तरह के रंग आते थे,

आते थे,

और इन पन्नों को भर कर चले जाते थे।

यह पन्ने आज भी मोल रखते हैं,

पर क्यों हम इनको अब मोल नहीं देते हैं ?

तो क्यों न आज हम इन पन्नों का मोल फिर बढ़ाएँ ?

यादों के समंदर में, न फिर इन्हें बहाएँ ?

इंसानियत के टूटते धागे

क्यों,

क्यों तुम गरीब पर तरस खाते हो !

जब रात अपने बिस्तर में तुम काटते हो ?

क्यों तुम दूसरों में कमी निकालते हो,

जब अपनी त्रुटियाँ भी नहीं सुधार पाते हो ?

अरे, जिसे तुम खुदा मानते हो !

क्या मुश्किल के वक्त में आता है ?

सारी ज़िंदगी का पूजा-पाठ,

सब पानी में बह जाता है।

कहते हैं अच्छाई,

हमेशा बुराई पर विजय पाती है,

ज़माना बदला है,

अब अच्छाई ही दोषी ठहराई जाती है।

अरे! क्यों बैठे हो उस कोने में ?

आओ अब तुम सामने आओ !

इंसान का इंसान से नाता तुम ही ने तोड़ा है,

अब तुम ही उसे फिर बनाओ।

इशिता खट्टर, एम 3-ए

माँ

सुना है, भगवान का दूसरा रूप होती हैं माँ,

अपने परिवार वालों के लिए सर्दियों की धूप होती है माँ।

माँ उस परिवार का नाम है जो दुख-दर्द में रोने नहीं देती

माँ उस ख्वाहिश का नाम है जो किसी चीज़ की कभी महसूस होने नहीं देती

चाहे कितना भी कहो उसे बुरा-भला

लेकिन माँ हमेशा देती है हमें सही सलाह।

प्यार-दुलार और ममता से भरा है तेरा आँचल

तेरी हर एक बात होती है बहुत अटल

खुशी का मौका हो तब याद आती है माँ,

चोट का दर्द हो तब बहलाती है माँ।

बच्चों की मासूमियत देखकर हो जाती है लाचार

छोटा सा एक परिवार और यही है उसका संसार।

छुट्टियों वाले दिन, जो दुगना काम करती है, वो होती है माँ,

पिता के साथ परिवार का सहारा होती है माँ।

सुबह सबको खिलाने के लिए, सबसे पहले जागती है वो,

रात को सबको खिलाकर ही सोती है वो।

यूँ कहो तो कुछ पाने के लिए भगवान से भी दुआ माँगनी पड़ती है

पर माँ बिन माँगे ही हर ज़रूरत को भाँप लेती है।

ऐ माँ, सुना है तेरे कदमों में जन्नत बसी है,

दूर न जाना मुझसे कभी बस मेरी मन्नत यही है।

लामया समर एम-3 बी

बाल मज़दूरी

बच्चों से करवाई जाती है बाल मज़दूरी !

पर पढ़ाई है उनके लिए ज़रूरी ।

करवाया जाता है उनसे काम

दिन-रात, सुबह-शाम ।

इनसे करवाया जाता है धंधा भीख का ।

वरना इनके मालिक सिखाते सीख इन्हें !

काट देते हैं इनके अंग

बेचारे रह जाते हैं शरीर भंग

उठाने पड़ते हैं ढ़ेरों सामान

गाते हैं दुख की तान ।

ढ़ाबों में करते हैं सफाई

इनके लिए है आगे कुआँ पीछे खाई ।

गाड़ी के शीशों को करते साफ

पर इनके क्रूर मालिक इन्हें नहीं करते माफ ।

मिलते हैं बहुत थोड़े पैसे

करनी पड़ती है जी तोड़ मेहनत, जैसे-तैसे

बाल मज़दूरी का करो खात्मा

इनके अंदर भी है, पवित्र आत्मा ।

सोहम राज एम 3-बी

भारत आज India बन गया।

भारत आज India बन गया।

भारत आज India बन गया।

नाश्ता आज BREKFAST बन गया।

दूध रोटी आज BREADJAM बन गयी।

ढोकला आज NOODLE बन गया।

चना आज BUBBLE GUM बन गया।

खान-पान की तस्वीर बदल तो रही ही है,

लेकिन PIZZA में वो मजा कहाँ जो आलू टिक्की में है।

सच ही, भारत आज India बन गया।

भारत आज India बन गया।

विविध भारती आज 98.3 FMबन गया।

मोहम्मद रफ़ी आज HONEY SINGH बन गया।

कत्थक आज HIP-HOP DANCE बन गया।

भाई आज BRO बन गया।

व्यक्ति विशेष तो वो ही हैं, लेकिन सम्मान बदल गया,

तभी तो, पिताजी आज POP`S बन गए।

सच ही, भारत आज India बन गया।

भारत आज India बन गया।

आयुष यादव एम 3 सी

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर विशेष कार्यक्रम

14 अगस्त 2017, सोमवार को हमारे विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन कक्षा छठी से बारहवीं तक के विद्यार्थियों के द्वारा किया गया।

विद्यालय के बाहरी सभागार में सभी विद्यार्थी एकत्रित हुए। इस सभा में कक्षा चौथी एवं पाँचवीं के विद्यार्थियों को भी शामिल किया गया। एक मिनट के मौन के बाद कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती वंदना से हुई। सरस्वती वंदना के बाद विद्यार्थियों के एक समूह ने 'वंदे मातरम्' का गायन प्रस्तुत किया। हमारे इस राष्ट्र गीत ने सभी के हृदय में देशभक्ति का भाव उत्पन्न किया। इसके पश्चात् हिन्दी के प्रसिद्ध कवि एवं नाटककार सर्वेश्वरदयाल सक्सेना द्वारा रचित नाटक 'बकरी' का मंचन किया गया। नाटक हमारे वर्तमान समाज की हकीकत को बहुत बेहतर ढंग से प्रस्तुत करता है। समाज सुधार के नाम पर देश के महापुरुषों के नाम का इस्तेमाल कर आम जन में कैसे भ्रम पैदा किया जाता है, साथ ही उनकी भावनाओं के साथ कितना गंदा मजाक किया जाता है । इसकी एक बानगी इस नाटक के माध्यम से विद्यार्थियों ने प्रस्तुत की।

कार्यक्रम के अंत में हम सब के अभिभावक आदरणीय डायरेक्टर सर ने भारतीय आजादी के आंदोलन के बहुत से महत्त्वपूर्ण पहलुओं से हमें परिचित कराया। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में हमारे महान पूर्वजों के संघर्ष एवं बलिदान को याद दिलाते हुए हमसब को इनके प्रति ऋणी होने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि देश की स्वतंत्रता, एकता एवं सहिष्णुता तभी कायम रहेगी जब हम सभी मिलकर संकल्प करें कि अपना-अपना दायित्व, अपनी-अपनी जिम्मेदारी को हम पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी से पूरा करेंगे। सर ने देश की आजादी की 70 वीं वर्षगांठ पर सभी को बधाई दी। तथा कार्यक्रम की सफलता के लिए अध्यापकों एवं विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ दीं।

कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ। फिर हमारी नियमित कक्षाएँ शुरु हुईं।

नंदिनी एम. महारना एम-3 डी

स्वतंत्रता दिवस पर विशेष सभा

दिनांक 11 अगस्त 2017 को ज्ञान भारती स्कूल में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर कक्षा 1 से 5 वीं तक के बच्चों ने प्रार्थना सभा में भाग लिया। सभा की शुरुआत प्रार्थना से हुई जिसमें कक्षा 1 से 12 वीं तक के विद्यार्थी शामिल हुए। छोटे बच्चों द्वारा सभा की शुरुआत में सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई । इसके बाद कुछ बच्चों के समूह ने भारत माता को समर्पित एक राजस्थानी लोकगीत गाया जिसके बोल थे '*ओ माता थारो रूप माने भालो लागे जी* ' इसके पश्चात विद्यार्थियों ने मुंशी प्रेमचन्द की प्रसिद्ध कहानी 'ईदगाह' पर नाटक प्रस्तुत किया। 'ईदगाह' के बाद विद्यार्थियों ने एक और नाटक प्रस्तुत किया, जिसका संदेश था विविधता में एकता। भारत में न कोई हिन्दू है, न मुसलमान, न कोई सिख है, न ईसाई, अपितु सभी भारतीय हैं। हमारी विविधता ही हमारी एकता की शक्ति है। यही भारतीयता का केंद्रीय सौंदर्य है।

इस प्रस्तुति के पश्चात विद्यार्थियों ने देश भक्ति गीत पर नृत्य प्रस्तुत किया। नृत्य इतना मनोहारी था कि पूरी सभा तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठी। कार्यक्रम के अंत में हम सभी के अभिभावक, विद्यालय के डायरेक्टर श्री आर.सी. शेखर सर ने सभा को संबोधित किया। उन्होंने स्वतंत्रता के अर्थ को बताते हुए, आज के समय में आज़ादी को कैसे सुरक्षित रखा जा सकता है, इस संबंध में अपने विचार रखे। उन्होंने कार्यक्रम की तारीफ करते हुए कहा कि नाटक एवं नृत्य के माध्यम से बच्चों ने भारतीयता को बेहतर ढंग से प्रस्तुत किया है। साथ ही उन्होंने सभी अध्यापकों की सराहना की। जिनके प्रयास से यह शानदार कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ, फिर नियमित रूप से कक्षाएँ प्रारंभ हुई।

अर्चिता एम-3 सी